न्यूज़लेटर

31 जनवरी, 2026

मनरेगा बचाओ

कांग्रेस ने मोदी सरकार के गरीब-विरोधी VB-GRAM-G कानून के खिलाफ पूरे देश में अभियान शुरू किया है, ये नया कानून मनरेगा को कमजोर कर उसे खत्म करने की साजिश है। राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी पूरे देश के उन मनरेगा कामगारों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है, जिनसे उनका संघर्ष से हासिल किया गया काम का अधिकार छीना जा रहा है। मनरेगा कोई एहसान नहीं है- यह भारत के सबसे गरीब लोगों के लिए गरिमा, सुरक्षा और जीवनयापन की गारंटी है।

कांग्रेस पार्टी ने भरोसा दिया है कि जब तक मनरेगा को पूरी तरह बहाल नहीं किया जाता, तब तक यह लड़ाई सड़क से लेकर संसद तक जारी रहेगी।

इस लड़ाई में जुड़िए!

मनरेगा: गांधी जी का सपना

- **काम का अधिकार:** रोज़गार को कानूनी अधिकार बनाया, ताकि हर व्यक्ति को सम्मानजनक काम मिले।
- **ग्रामीण विकास:** ग्रामीण मज़दूरी बढ़ाई, मजबूरी में होने वाले पलायन को रोका और बहुजन आजीविका को मज़बूती दी।
- **महिला सशक्तिकरण:** समान काम के लिए समान वेतन की गारंटी दी– मनरेगा में 55% से अधिक कामगार महिलाएं हैं।
- **ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र:** स्थानीय कामों की योजना बनाने और उन पर निगरानी के लिए ग्राम सभाओं और पंचायतों को मज़बूत किया।
- **न्याय और सुरक्षा:** हर समुदाय के लिए समान अवसर सुनिश्चित किए और संकट व आर्थिक झटकों के समय जीवनरेखा साबित हुआ।

मज़दूरों से काम का अधिकार छीनना

राहुल गांधी ने दोहराया कि मनरेगा सिर्फ एक योजना नहीं है, बल्कि ये गरीबों का अधिकार है। उन्होंने बताया कि इसने ग्रामीण रोज़गार का विस्तार किया और ग्रामीण संकट को कम किया। उन्होंने देशभर के कामगारों से मुलाकात की, जिन्होंने बताया कि मनरेगा ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और सुरक्षित आजीविका तक उनकी पहुंच को बेहतर बनाया। महिला कामगारों ने बताया कि इस योजना ने उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता की राह दिखाई। उनके अनुभव सुनने के बाद, राहुल गांधी ने चेतावनी दी कि मोदी सरकार का एजेंडा इस अधिकार को खत्म करना है, और इसे बिचौलियों को सौंपना है।

मनरेगा कामगारों के साथ बातचीत यहां देखें।

पंचायतों को कमजोर करने की साजिश

राहुल गांधी ने कहा कि मनरेगा के पीछे सोच थी कि विकास योजनाओं को दिल्ली के बजाय सीधे पंचायतों के माध्यम से चलाया जाए। इस योजना ने स्थानीय संस्थाओं को मज़बूत करके, लोकतंत्र को मज़बूत किया और यह सुनिश्चित किया कि विकास का खाका खुद मज़दूर तय करें।

राहुल गांधी ने बताया कि मोदी सरकार इसे केंद्रीकृत कर रही है, पंचायतों को कमजोर कर रही है, और सारा धन-शक्ति, ठेकेदारों और बिचौलियों को सौंप रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि बीजेपी राजा-महाराजा वाले समय का हिंदुस्तान फिर से लाना चाहती है। मज़दूरों के बीच एकता का आह्वान करते हुए, उन्होंने फिर से कहा कि मनरेगा तभी सफल हो सकती है जब यह पंचायतों के पास रहे, न कि दूर बैठी केंद्र सरकार के पास।

मनरेगा बचाओ मोर्चा यहां देखें।

संघीय ढांचे पर हमला

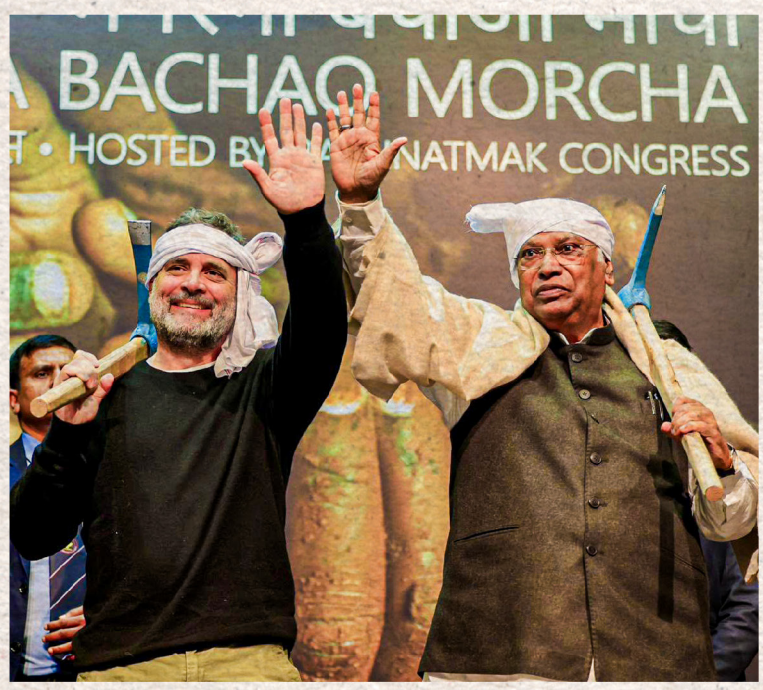

राहुल गांधी ने मल्लिकार्जुन खड़गे जी के साथ ग्राम प्रधानों, रोजगार सेवकों और श्रमिकों के नाम एक पत्र लिखा। इस पत्र में, नए कानून के माध्यम से देश के संघीय ढांचे पर आक्रमण की साजिश को राहुल गांधी ने उजागर किया। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार कैसे चुपके से अपनी ज़िम्मेदारियों को राज्यों पर डाल रही है।

पहले केंद्र सरकार मनरेगा के तहत, मज़दूरी का पूरा खर्च उठाती थी जबकि ये नया कानून राज्यों को 40% खर्च उठाने के लिए मजबूर करता है। राहुल गांधी ने तर्क दिया कि यह वित्तीय बोझ राज्यों की काम उपलब्ध कराने की क्षमता को बुरी तरह सीमित कर देगा, जिससे यह योजना अंदर से कमज़ोर हो जाएगी। उन्होंने यह चिंता भी जताई कि यह कानून राजनीतिक भेदभाव का रास्ता खोलता है, जिसमें विपक्षी दलों द्वारा शासित राज्यों को केंद्र से फंड मिलने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

पत्र यहां पढ़ें।

झलकियां

जनवरी एक नज़र में

भागीरथपुरा में दूषित पानी के कारण जान गंवाने वालों के परिजनों से मुलाकात की।

सेंट थॉमस इंग्लिश हाई स्कूल, गुडलूर, तमिलनाडु के होनहार छात्रों से संवाद किया।

कोच्चि में स्थानीय निकाय चुनावों में शानदार प्रदर्शन पर कांग्रेस-यूडीएफ कार्यकर्ताओं को बधाई दी।

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. एम लीलावती को प्रियदर्शिनी साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया- 98 वर्ष की आयु में भी उनका अनुशासन और लेखन प्रेरणादायी है।

राजीव गांधी स्टेडियम में आयोजित रायबरेली प्रीमियर लीग का उद्घाटन किया।

हरियाणा के मानेसर में 50% अमेरिकी टैरिफ और अनिश्चितता से भारत के वस्त्र निर्यातकों पर पड़ने वाले गंभीर प्रभाव पर चर्चा की।

न्यूज़लेटर को सब्सक्राइब करने के लिए यहां क्लिक करें